'तेरा वर्ष'

वैराग्य सप्ताह

21.04.2013

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान बेहद का वैरागी हूँ।

- ब्रह्मा बाबा बेहद के वैराग्य वृत्ति के आधार से ही पास विद ऑनर हुए। हम भी प्यारे बाबा को फॉलो करते हुए खुद को चेक करें कि मैं - **अ**. स्वयं के देह व पदार्थों से, **ब**. लौकिक संबंधों से, **स**. साधन-सुविधाओं से **द**. और अपने पुराने स्वभाव-संस्कारों से कहाँ तक वैरागी बना हूँ... ?

2. **योगाभ्यास** –

अ. ब्रह्मा बाबा के अखण्ड वैराग्यपूर्ण जीवन को अपने सामने लायें...बाबा का तन सदा शिव बाबा को समर्पित था...बाबा का मन सदा मनमनाभव था...बाबा का धन यज्ञ अर्थ था...संकल्प मात्र भी मेरापन नहीं...कितना साधारण वस्त्र...कितनी छोटी सी झोपड़ी...संसार से सम्पूर्ण विरक्त...एक की याद में मस्त...मैं कहाँ तक उनके समान संसार से अनासक्त और उपराम बना हूँ... ? चेक करें और चेंज करें।

ब. स्वयं से बातें करें कि क्या लेकर जाऊँगा मैं इस संसार से... ? क्या धन-दौलत, जमीन-जायदाद या व्यक्ति-वैभव मेरे साथ जायेंगे... ? ? जिन्हें मैं अपना समझता हूँ क्या वे वास्तव में मेरे हैं... ? ? ? सत्य तो यह है कि मैं अकेले ही आया हूँ और अकेले ही वापस जाऊँगा...फिर इस विनाशी दुनिया से कैसा लगाव... कैसी आसक्ति...!!

स. महाविनाश का भयंकर दृश्य...चारों ओर हाहाकार, मारकाट, अत्याचार...खून-ए-नाहक खेल...पाँचों तत्वों और पाँचों विकारों का फुल फोर्स से आक्रमण...मैं साक्षी होकर सारा दृश्य देख रहा हूँ और विश्व कल्याणकारी बापदादा के साथ सभी को गति-सद्गति प्रदान कर रहा हूँ...।

द. अंतिम दृश्य को इमर्ज करें...सभी मरे पड़े हैं और ज्योतिबिंदु आत्माएँ वापस घर की ओर जा रही हैं...मैं भी अपना स्थूल कलेवर छोड़कर बाबा के साथ परमधाम जा रहा हूँ...।

3. **धारणा – बेहद की वैराग्य वृत्ति**

- `अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। **बेहद के वैरागी अर्थात् अनहद स्मृति स्वरुप**। अपनापन पूरी तरह मिट जाए और उसकी जगह **बाबापन** आ जाए।`

- `जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में, सबमें बेहद के वैरागी तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा।` – **शिवभगवानुवाच**

4. **चिंतन** –

- बेहद के वैराग्य का अर्थ क्या है और वर्तमान समय इसकी आवश्यकता क्यों है ?
- बेदद के वैराग्य व लौकिक-अलौकिक कर्त्तव्यों का बैलेन्स कैसे रखें ?
- ब्रह्मा बाबा के वैराग्यपूर्ण जीवन पर एक निबंध लिखें।

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! वैराग्य साधना का बीज है। वैराग्य ही त्याग, तपस्या और निःस्वार्थ सेवा की जननी है। वैराग्य हमें बाबा के समान सम्पूर्ण बनाने की की (चाबी) है। अतः अब हम ब्रह्मा बाप समान बेहद का वैराग्य धारण कर समय को समीप लायें और बाबा को संसार में प्रत्यक्ष करें।